चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में स्त्री स्वत्व के विविध रूप

CHANDRAKANTA KE UPANYASON MEIN STRI SWATVA KE VIVIDH ROOP

Submitted by

SHAMEENA.T

(20PHHIF001)

Supervisor

(Dr.) SHOBHANA KOKKADAN

Professor & HoD

Department of Hindi

Dean of Arts and Social Sciences

Thesis submitted to

Avinashilingam Institute for Home Science and Higher Education for Women

Coimbatore - 641043

In Partial Fulfilment of the Requirements for the Degree of

Doctor of Philosophy in Hindi

April 2024

<u>प्रस्तावना</u>

प्रस्तुत शोध विषय **'चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में स्त्री स्वत्व के विविध रूप'** के विश्लेषणात्मक अध्ययन में विषय चयन, साहित्य की समीक्षा, अनुसन्धान की रूपरेखा, सामग्री संकलन, उपन्यासों का विश्लेषण, उपन्यासों में प्रतिपादित विभिन्न यथार्थ का विश्लेषण, उपसंहार, अनुसंधान की उपलब्धियाँ, अध्ययन की नई दिशाएँ आदि शोध पद्धति को वस्तुनिष्ठ रूप से अध्ययन किया हैं।

<u>साहित्य समीक्षा</u>

- वासमशेट्टी माधवी, चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में चित्रित समस्याएँ, आंध्रा विश्वविद्यालय, विशाखपटनम, २०१७.
- श्रीमति डॉली पाण्डेय, चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक समस्यायें, पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर,२०१४.
- अलका, चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में समसामयिक विमर्श- 'ऐलान गली जिन्दा है' एवं 'कथा सतीसर' के विशेष संदर्भ में, चौधरी चरण सिँह विश्वविद्यालय, मेरठ,२००८.
- अमोल विट्ठल कासार, चन्द्रकान्ता के कथा-साहित्य का अनुशीलन, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, महाराष्ट्र,२००२.
- चन्द्रकान्ता के साहित्य में व्यक्त सामाजिक जीवन का अनुशीलन, शेख मदीना सिकंदर, डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद,२००९.
- श्रीजा ए. एस, चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में संस्कृति, केरला विश्वविद्यालय, २०१८

<u>प्रेरणा एवं सामग्री स्त्रोत</u>

चन्द्रकान्ता के उपन्यासों पर शोध कार्य करने की प्रेरणा मुझे इसलिए हुआ कि उनका ही कथन है, **"महिला हूँ, पर लेखन खुद महिला समझकर नहीं किया। महिला लेखन, पुरुष लेखन जैसी चीज मैं मानती नहीं।"** मैंने अपने एम.फिल शोध कार्य हेतु चन्द्रकान्ता द्वारा लिखित उपन्यास **'अपने- अपने कोणार्क का विश्लेषणात्मक अध्ययन'** किया है। एक महिला

की हैसियत से वे हमेशा पाठकों के बीच रहकर स्त्री स्वत्व के विविध रूपों का अध्ययन एवं स्त्री के अंतरंग- बहिरंग जीवन संघर्ष को जानने में सक्षम हुई है। यह मेरेलिए अधिक जानने की उत्सुकता पैदा हुई। उनके ज़्यादत्तर उपन्यास स्त्री को केन्द्रित एवं स्त्रियों की समस्याओं, समकालीन परिवेशों, स्त्री विषयक परिस्थितियों, स्त्री की भीतरी एवं बाहरी दर्द भरी जीवनयापनाओं का यथार्थ अंकन है जो तदयुगीन परिप्रेक्षय में प्रासंगिक रहा है। वे एक यथार्थवादी आदर्शवादी लेखिका होने के नाते अपने मन के अंदरद्वंद्वों एवं समाज में घटित विभिन्न प्रकार के नकारात्मक परिस्थितियों को पाठकों तक पहुँचाने में सफल रही है। उन्होंने वही लिखा जो खुद भोगा, और जो दूसरों को भोगते देखा, महसूस किया। उन्होंने मानव-सम्बन्धों के विघटित मूल्यों के अव्यवस्थित परिणामों, मानवीय रिश्तों के बिखरावों, स्त्रियों की विसंगतियों को सामाजिक परिप्रेक्ष्य में उजागर किया साथ ही सामाजिक प्रतिबद्धता, मानवीय मूल्य दृष्टि एवं मानवीय संवेदना से परिचालित होकर समाज में घटित तत्कालीन समस्याओं को अवगत कराने में खुद अभिप्रेरित चेतना दिखाई और समाज की पीड़ा को समझकर उसे न्याय देने का प्रयास किया है।

<u>सामग्री स्त्रोत</u>

- **प्राथमिक सामग्री :** चन्द्रकान्ता द्वारा लिखित सात उपन्यास जैसे अर्थान्तर', अंतिम ' 'साक्ष्य,

  'बाकी सब खैरियत है', 'ऐलान गली जिन्दा है', यहाँ वितस्ता बहती ' 'है,

  'अपने कोणार्क -अपने' और ।'कथा सतीसर'

- **सहायक सामग्री :** अन्य शोध कार्य, स्त्री स्वत्व संबंधित पुस्तकें, पत्र पत्रिकाएँ, वेबसाइट एवं सामाजिक माध्यमों के विविध एप्प

<u>शोध का उद्देश्य</u>

- शोध के अध्ययन से स्त्री स्वत्व के विविध रूपों को पहचानना।

- भारत में स्त्री की दशा एवं दिशा को समाज में अवगत कराना।
- स्त्री के विरुद्ध होनेवाली समस्याओं, संघर्षों, विसंगतियों, तनावों, व्यथाओं को तार्किक क्षमता से उभारने को कोशिश करना।
- दाम्पत्य जीवन से जुड़ी विभिन्न प्रकार के संघर्षों को जानकार वैवाहिक जीवन की पवित्र सम्बन्धों के महत्वों को अवगत कराना।
- अस्तित्वहीन एवं आत्मसम्मानहीन स्त्री की मानसिक तनावों एवं संघर्षभरित जिन्दगी से त्रस्त स्त्री की मानसिक चेतनाओं को दर्शाना।
- बदलते जीवन संदर्भों में खो चुकी नैतिकताओं एवं आकांक्षाओं की पुनर्परीक्षण कर लेना।
- अस्तित्वहीन यानि अस्मिताहीन स्त्री को यह अवगत कराना कि कोई भी स्थिति एवं संदर्भ अंतिम नहीं होता।
- असंतुलित परिवार के स्त्रियों के दाम्पत्य पवित्र बंधन के बनने व बिगड़ने की मूल समस्याओं को स्पष्ट करना।

<u>लेखिका के बारे में</u>

चन्द्रकान्ता का कथन है- **“मेरेलिए लेखन जहाँ भोगे हुए यथार्थ की अभिव्यक्ति है, वहीं अनुभव किए सत्य की भी। मैं ने जिन संदर्भों एवं स्थितियों को सिद्धांत से महसूस किया, व्यवस्था के जिन देशों ने मुझे दोषित किया, मैं ने उन्हें अपनी रचनाओं में डाला।”**

किसी भी साहित्यकार का जीवन उसके साहित्यिक जीवन और रचनात्मक लेखन का सम्पूर्ण विवरण देता है। साहित्यिक कृतियों की नींव साहित्यकार के व्यक्तिगत जीवन और अनुभवों के आधार पर रूपायित होती है। हर किसी का व्यक्तित्व और विचारधारा सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, साँस्कृतिक आदि विभिन्न विधाओं के अनुसार विस्तृत हो जाती है, साहित्य इसका गवाह है। चन्द्रकान्ता का जन्म ०३ सितम्बर १९३८ को श्रीनगर के एक कश्मीरी परिवार में हुआ। उनके लेखन का मूल आधार अनुभवों के आधार पर रूपान्तरित होती है। अपने जिन्दगी में भोगे हुए कटु अनुभवों को सच्चाई की भाषा से व्यक्त करने में वे

एकदम आगे है। समकालीन महिला लेखिकाओं में सामाजिक जागरूकता, साहित्यिक विषयों की विविधता, विषयगत नवीनता को बनाये रखने में उनकी रचना कौशल अत्यंत सराहनीय एवं प्रशंसनीय है। वे मानव जीवन से सम्बन्धित तदयुगीन विभिन्न विषयों एवं सामाजिक गतिविधियों को अपनी तूलिका से प्रासंगिक बनाने में हमेशा सक्षम रही है। उन्होंने समाज के स्वस्थ एवं विशेषकर स्त्रियों के सुखी जीवन को दुखत बनाने वाली समस्याओं का मानवीय स्तर पर समाधान करने का प्रयास किया है। वे स्त्रियों के विभिन्न प्रकार की चुनौतियों, बुनियादी सच्चाइयों, समाज के विभिन्न पहलुओं, विघटित दाम्पत्य मूल्यों, बदलते स्त्री- पुरुष सम्बन्धों, पश्चिमी प्रभावों आदि को अपनी रचनाओं के दौरान उजागर करने का प्रयास किया है।

अध्याय वर्गीकरण

प्रस्तुत शोध विषय **'चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में स्त्री स्वत्व के विविध रूप'** को अध्ययन की सुविधा और वैज्ञानिकता को दृष्टि में रखकरमैं ने पाँच अध्यायों में विभाजित , **नयी दिशाएँ एवं :समकालीन हिन्दी उपन्यास और स्त्री विमर्श'** किया है। प्रथम अध्याय **'उपलब्धियाँ** इस अध्याय में समकालीनता का अर्थ एवं स्वरूप ,परिभाषासमकालीन महिला , लेखन की प्ऱमुख प्रवृत्तियाँ जैसे-भूमण्डलीकरण , पर्यावरण सजगता एवं आर्थिक उदारीकरण ,सांप्रदायिकता ,मीडिया का प्रभाव ,तकनीकी क्रान्ति ,उपभोक्तावाद का प्रसार , स्त्री विमर्श पर गहन अध्ययन किया गया है। महिला उपन्यास ,दलित विमर्श ,आतंकवाद लेखन की पृष्ठभूमि का सामान्य परिचय देने के साथ प्रथम महिला उपन्यासकारसमकालीन , महिला उपन्यासकारों की सृजन की अस्मिताओं पर भी विशेष चर्चा किया है। इसके अलावा समकालीन महिला उपन्यासकारों जैसे कृष्णा सोबती, मेहरुन्निसा परवेज़, मृदुला गर्ग, उषा प्रियंवदा, मन्नू भण्डारी, मंजुल भगत, चित्रा मुदगल, राजी सेठ, मैत्रेयी पुष्पा, शशि प्रभा शास्त्री, नासिरा शर्मा आदि लेखिकाओं के सृजन की अस्मिताओं पर अध्ययन किया है साथ ही चन्द्रकान्ता का व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विश्लेषणात्मक अध्ययन करते हुए उनकी

जीवनवृत्तपुरस्कार एवं स ,रचना संसार ,जन्म तथा परिवार ,म्मान आदि पर चर्चा किया है। परम्परागत स्त्री की आदर्शवादी लकीर से हटकर जीने वाली चन्द्रकान्ता का व्यक्तित्व एवं कृतित्व परस्पर संबंधित रहते हैं। उनके कर्तव्यशील व्यक्तित्व और व्यक्तितत्व (रचना संसार) से जुड़े कृतित्व का अध्ययन इस अध्याय की विशेषता है।

द्वितीय **'स्त्री स्वत्व के नए अर्थ एवं सन्दर्भ '**में स्वत्व स्वरूप :एवं अवधारणा ,स्त्री स्वत्व की अवधारणापरम्परा एवं स्वरूप :, स्त्री व्युत्पत्तिगत अर्थ पर विचार किया गया है। भारतीय सन्दर्भ में स्त्री स्वत्व के विविध स्वरूप के प्रति उपन्यासकार चन्द्रकान्ता पूरी संवेदना व्यक्त करती है। विभिन्न भारतीय संदर्भ में स्वत्व का अध्ययन कर वैदिक काल , आधुनिक काल आदि उपशीर्षकों के ,मध्ययुगीन काल ,जैन और बौद्ध काल ,महाकाव्य काल अंतर्गत स्त्री स्वत्व के स्‌वरूप पर प्रकाश डाला गया है। इसके साथ स्त्री स्वत्व के नये संदर्भ एवं पाश्चात्य दृष्टि ,पश्चिम का स्त्री मुक्ति आन्दोलन, स्त्री मुक्ति आन्दोलन का प्रथम व दूसरा चरण, आन्दोलन का प्रेरक साहित्य, भारत में स्त्री की स्थिति, भारत का स्त्री मुक्ति आन्दोलन एवं आन्दोलन का प्रेरक साहित्य, निष्कर्ष आदि पर चर्चा किया गया हैं।

तृतीय अध्याय **'चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में स्त्री स्वत्व के विविध रूप'** में चन्द्रकान्ता के उपन्यासों (अर्थान्तर, बाकी सब खैरियत है, ऐलान गली जिन्दा है, अंतिम साक्ष्य, यहाँ वितस्ता बहती है, अपनेअपने कोणार्क - और कथा सतीसर) का अध्ययन किया है। इसके साथ लेखिका के उपन्यासों अभिव्यक्त स्त्री स्वत्व के विविध रूप जैसे विचारधारा से प्रभावित स्त्रीअसफल दाम्पत्य ,पारिवारिक स्नेह सौहार्द स्त्री ,आधुनिक विचारधारा से ओतप्रोत स्त्री , ,विवाह पूर्व एवं विवाहेतर प्रेम और यौन सम्बन्धों में फँसी स्त्री ,जीवन बितानेवाली स्त्री किशोरावस्था में किए प्रेम में फँसी स्त्रीशोषण के शिकार ,अनमेल विवाह से त्रस्त स्त्री , पके उम्र ,वृद्धावस्था में स्त्री ,अकेलापन से तनावग्रस्त एवं संघर्षभरित उदासीन स्त्री ,बनी स्त्री आतंकवाद से त्रस्त स्त्री आदि पर चर्चा किया गया है। स्वभाव विशेष के ,में अनब्याही स्त्री

आधार पर स्त्री स्त्री स्वत्व के विविध रूप को साहसीप्रेमी ,स्त्री के खिलाफ स्त्री ,सेवाभावी , दहेज प्रथा से विरोधी स्त्री ,विचार और भावना के द्वन्द्व में फँसी स्त्री ,के इंतजार में स्त्री आदि उपशीर्षकों के अंतर्गत चर्चा की गयी है।

चौथा अध्याय **चन्द्रकान्ता के' स्त्री पात्र 'प्रतिरोध और समस्याएँ ,अस्मिता की तलाश ,**में चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में चित्रित प्रमुख स्त्री पात्रों चर्चा किया है। उनके उपन्यासों में स्त्री अस्मिता की तलाश का विश्लेषणात्मक अध्ययनस्त्री अस्मिता ,अस्मिता अर्थ एवं स्वरूप , स्त्र ,का स्वरूपी अस्मिता की तलाशउपन्यासों में चित्रित स्त्री स्वत्व की समस्याओं के , ,आर्थिक ,सामाजिक ,विवध रूप जैसे पारिवारिकराजनीतिक और आतंकवाद से जुड़ी समस्याएँ, धार्मिक व साँस्कृतिक समस्याएँ आदि चर्चा की गई है। अंत में निष्कर्ष भी जोड़ा गया है।

पंचम अध्याय **'चन्द्रकान्ता के उपन्यासों की भाषिक संरचना'**में प्रस्तुत उपन्यासों में अभिव्यक्त शिल्प विधान -शिल्पशिल्पागत ,स्वरूप :शिल्प ,परिभाषा :शिल्प ,अर्थ : वैशिष्ट्य जिसमें कथानक,चरित्र चित्रण, कथोपकथनसंवाद / (पात्रानुकूल संवाद, भावानुकूल संवाद, दीर्घकार्य संवाद, संक्षिप्त संवाद) देशकाल वातावरण, भाषा शैली (वर्णनात्मक शैली, मनोविश्लेषणात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली, प्रतीकात्मक शैली, पत्रात्मक शैली, आँचलिक शैली, कोष्ठक शैली, मिश्रित शैली, पूर्वदीप्ति शैली, लोककथा शैली,चित्रात्मक शैली) उद्देश्य व शीर्षक की सार्थकता जोड़ा गया हैं। चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में भाषागत वैशिष्ट्य शीर्षक में तत्सम शब्द, तद्भव शब्द, देशज शब्द या आँचलिक शब्द, विदेशी शब्द, अंग्रेजी शब्द, अंग्रेजी वाक्यों का प्रयोग, कश्मीरी वाक्यों का प्रयोग, कश्मीरी तथा संस्कृत वाक्यों का प्रयोग, मुहावरों का प्रयोग, कहावतों और लोकोक्तियों का प्रयोग, सूक्तियों का प्रयोग, बिम्बों एवं प्रतीकों का प्रयोग, अलंकारों का प्रयोग आदि पर चर्चा की गई है। अंत में निष्कर्ष, उपसंहार एवं संदर्भ ग्रंथ सूची आदि जोड़ा गया है।

<u>उपसंहार</u>

वर्तमान युग में उपन्यास सर्वाधिक लोकप्रिय विधा के रूप में विकसित हो चुका है। यह विधा मानवीय संवेदना के अनेक स्तरों एवं स्वरों को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने की क्षमता रखती है। युग चेतना और वैचारिक परिवेश से प्रभावित होकर उपन्यासकार रचना के क्षणों में मूलतः संघर्षों और सच्चाइयों से गुजरता है। समकालीन महिला उपन्यासकारों में सुप्रसिद्ध लेखिका चन्द्रकान्ता ने अपने उपन्यासों के माध्यम से स्त्री स्वत्व के विविध रूपों, स्त्री के युगीन जीवन प्रश्नों, स्त्री की मूल्यों- मूल्यहीनताओं, रिश्तों के बिखरावों, संघर्षों और समस्याओं को अभिव्यक्त करने में प्राथमिकता दी हैं। उनकी साहित्यिक रचनाएँ अपने अनुभव का प्रामाणिक दस्तावेज होने के नाते उन्होंने मानव जीवन की सरल और सुन्दर घटनाओं को वास्तविकता की सुन्दर माला में पिरोया है। उनके उपन्यासों में स्त्रियों की समस्याओं, कश्मीर से निष्कासित लोगों के संघर्ष, आतंक के भयानक दुष्परिणाम, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा, विवाह पूर्व एवं विवाहेतर अवैध सम्बन्ध, प्रेम विवाह के दुष्परिणामों से पीड़ित स्त्री जीवन, स्त्रियों की स्वत्वहीनता, विदेशाकर्षण, रिश्तों के बिखराव और असंवेदनशीलता के कारण मध्यवर्गीय लोगों के जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्याओं का निर्भीकतापूर्वक चित्रण किया है।

लेखिका ने चर्चित उपन्यासों के द्वारा स्त्री की आर्थिक स्वतंत्रता का समर्थन किया है। अस्तित्वहीन स्त्रियों के प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त कर स्त्री के जीवन में विकास के मार्ग को अवरुद्ध करनेवाली पारंपरिक सोच को एक त्रासदी के रूप में अभिवर्णित किया है। उपन्यासों में निम्न एवं मध्यवर्गीय परिवारों में पनप रही ऊब, घुटन व अशान्ति के नेपथ्य में स्त्री जीवन को नियंत्रित करने वाली आर्थिक परावलंबिता, साँस्कृतिक दबाव आदि को वस्तुनिष्ठ रूप से समाज के सामने रखा है। समान अधिकारों की माँग, अस्तित्व की सुरक्षा आदि मुद्दों पर प्रतिनिधि पात्रों के माध्यम से लेखिका ने मौलिक विचार व्यक्त किए और स्त्री के व्यक्तित्व की गरिमा का खूब समर्थन किया है।

<u>अनुसंधान की उपलब्धियाँ</u>

स्त्री स्वत्व के विविध रूपों को लेकर अध्ययन करना अपने आप में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। स्त्री स्वत्व मूलतः स्त्री चिंतन से जुड़ा एक पहलू है, जिसके केन्द्र में उनके सम्पूर्ण अस्तित्व को पहचानने की विचारधारा है। यह शोध की मुख्य उपलब्धि है कि स्त्री को समाज में पूर्ण रूप से प्रतिष्ठित करना और उसे एक इंसान के रूप में देखना और स्वीकारना। लेखिका द्वारा चित्रित, विवेचित स्त्री पात्रों के स्वत्व एवं अस्मिता अपने आप में बेजोड़ है, जो कि एक सशक्त साहित्य की प्रबल धारा के रूप में प्रवाहमान एवं चर्चित है। अनुसंधान का क्षेत्र इससे निश्चित ही अपनी उपलब्धि को प्राप्त करता है। स्त्री अपने स्वत्व के तहत अपने अधिकारों के प्रति सजग हो रही है, जो एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाएगी।

चन्द्रकान्ता एक यथार्थवादी लेखिका है, उनका यथार्थवाद मानवातावादी विचारधारा पर आधारित है, जो बृहद सामाजिक धरातल पर भारतीय जन जीवन के कई पक्षों के कलात्मक विश्लेषण करते है और सामाजिक चेतना के नए आयामों और क्षितिजों को भी खोलते हैं। वे बहुमुखी प्रतिभा की धनी है, एक जागरूक कलाकार हैं जिन्होंने उपन्यासों के माध्यम से व्यक्ति के बाह्य जगत, विशेषकर स्त्रियों की स्वत्वहीनता के उन तमाम समस्याओं का आकलन किया है, जो इक्कीसवीं सदी के समसामयिक परिप्रेक्ष्य में एक प्रासंगिक विषय रहा है। उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से स्त्री स्वत्व के विभिन्न रूपों, समस्याओं, संघर्षों को विभिन्न परिवेश के साथ चित्रित किया हैं, अतः चर्चित उपन्यासों में स्त्री स्वत्व के विविध रूपों को प्रस्तुत करने में लेखिका ने काफी सफलता प्राप्त हुई है।

स्त्रियाँ अपनी स्वतंत्रता एवं अस्तित्व के लिए संघर्ष कर एक नई दिशा खोलती हैं और साथ ही जिन्हें स्वत्व को एक व्यापक सरोकार से जोड़ती हैं, जिससे उनको अपने लिए एक नया माहौल एवं नई परिवेश मिलता है, जो अपने आप में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाएगी। हमारे देश की प्रगति एक सतत, दीर्घकालिक प्रक्रिया है। पिछले कुछ वर्षों से स्त्रियों ने अपनी कड़ी मेहनत और विद्रोह की कई सकारात्मक बदलाव समाज में लाई हैं। आज

स्त्रियाँ अपने अधिकारों के लिए सक्रिय रूप से लड़ रही है, जिससे उनके जीवन की परिभाषा बदल रही है। स्त्रियों का शोषण आज भी हर क्षेत्र में हो रहा है, लेकिन आधुनिक स्त्रियों ने इसका विरोध करना शुरू किया है और वह अब आर्थिक रूप से स्वतंत्र होती, सबल बनती जा रही हैं।

आजकल स्त्रियाँ सफलता के दौर पर है वे शिक्षा के माध्यम से अपने स्वत्व को बनाए रखकर अपने अधिकारों के लिए लड़ती है और स्वतंत्रता का अनुभव करती हैं, लेकिन दुखद वास्तविकता यह है कि आज भी कई स्त्रियाँ ऐसी हैं जिन्हें अपने स्वत्व और अस्तित्व की पहचान दूसरों से माँगनी पड़ती है क्योंकि समाज में एक ऐसी अनैतिक व्यवस्था चलती है जहाँ स्त्रियों पर बहुत अधिक अनैतिक नियंत्रण होता है। और कभी- कभी तो शिक्षित स्त्रियाँ भी अपने अधिकारों से वंचित हो जाती हैं और ऐसी आंतरिक और बाहय परिवेश के दबाव के कारण व्यक्ति अपने स्वत्व खो देता है और अस्तित्वहीन जीवन जीने को मजबूर एवं विवश हो जाती है। अस्तित्वहीन स्त्रियों की हालत आत्मविश्वासहीन एवं आत्मसम्मानहीन हो जाती है। चर्चित उपन्यासों में ऐसे अनेक स्त्रियाँ है जो अपने स्वत्व की तलाश में भटकती रहती है। इस प्रकार के पारम्परिक अनैतिक मूल्यों से बचने केलिए स्त्री को सजग एवं जागरूक होना अनिवार्य है।

यहाँ लेखिका ने शोषित- पीड़ित, संघर्षभरित- त्रासदीपूर्ण स्त्रियों के स्वत्वों का वस्तुनिष्ठ वर्णन करने के साथ आधुनिक विचारधारा से ओतप्रोत, सशक्त, जिद्दी, विद्रोही, स्वाभिमानी स्त्रियों के सफलतापूर्ण स्वत्व का वर्णन भी दर्शाया हैं। शादी के बाद अपनी सुख- सुविधाओं एवं अस्तितव को खोकर सिर्फ अपने ससुराल वालों केलिए कष्टमय जिन्दगी व्यतीत शिक्षित स्त्री की व्यथा- कथा आज भी जारी हैं।

शिक्षा के अभाव में स्त्रियों की हालत, शारीरिक तथा मानसिक शोषण के शिकार बनने की विवशता और संयुक्त पारिवारिक विघटन के नेपथ्य में उत्पन्न समस्याओं का अध्ययन करते हुए लेखिका ने पारिवारिक स्नेह- सौहार्द को बनाये रखने का आग्रह किया है। उन्होंने

स्त्रियों के शोषण के प्रति आक्रोश व्यक्त करके और स्त्री शिक्षा का समर्थन करके महिलाओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाया है, जिससे स्त्रियों को अपनी समस्याओं का सामना करने की क्षमता, दृढ़ संकल्प और आत्मनिर्भर बनने की शक्ति मिलती है। स्त्रियों को आत्मनिर्भर बनने के लिए शिक्षित होना जरूरी है, तभी वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होंगी और पुरुषों की गुलामी से मुक्त होकर समाज में अपनी स्वत्व की खोज कर स्वतंत्र अस्तित्व एवं अस्मिता स्थापित कर सकेंगी।

समसामयिक आर्थिक विषमताओं एवं शोषण की प्रक्रिया को एक विडम्बना के रूप में स्वीकार करते हुए लेखिका ने इस विडम्बना के प्रति हो रहे विद्रोह को अपने प्रतिनिधि पात्रों के माध्यम से विविध रूपों में व्यक्त किया है। कश्मीर में आतंकवादियों के अत्याचारों, बहुओं और बेटियों की इज्जत लूटने वाले आतंकवादियों की क्रूरताओं और बलात्कारों के शिकार बनी स्त्रियों के प्रति लेखिका ने अपनी संवेदना एवं आक्रोश प्रकट की है। बदलते सामाजिक मूल्यों तथा मान्यताओं के नेपथ्य में जाति एवं धर्म से सम्बन्धित विचारों में बदलाव की माँग करते हुए लेखिका ने सर्वहारा वर्ग को सामाजिक न्याय दिलाने के पक्ष में अपने विचार व्यक्त किए हैं।

उनका साहित्य किसी दर्शन या सिद्धांत से प्रभावित नहीं अपितु बदलती युगीन परिस्थितियों का दस्तावेज है। उन्होंने अपने उपन्यासों के दौरान परिवार, अर्थ, राजनीति, धर्म, संस्कृति, स्त्री आदि विभिन्न आयामों का अंकन कर अपनी सामाजिक प्रतिबद्धता पूरी तरह से निभाई है। उनके उपन्यासों में मध्यवर्गीय लोकजीवन, ग्राम अंचल, नगरीय जीवन के साथ विदेशी परिवेश भी दर्शाया है।

चन्द्रकान्ता के लेखन **बेहतर दुनिया और बेहतर भविष्य की कामना** से प्रेरित है इसलिए उन्होंने मांगपरक लेखन न कर भारतीय संस्कृति के आदर्श को प्रधानता दी है। अनमेल विवाह को एक विडम्बना के रूप में दर्शाकर लेखिका ने शिक्षार्जन और आर्थिक स्वावलंबन को इस समस्या के समाधान के रूप में स्वीकार किया है। उनके उपन्यासों में स्त्री

प्रतिरोध का एक नया दृष्टिकोण अपनाया गया है तथा स्त्री की समस्याओं की वस्तुनिष्ठ एवं विश्लेषणात्मक अभिव्यक्ति होने के साथ- साथ उन्होंने उनसे बाहर निकलने की रास्ते भी खोली हैं।

उनके कथानक में रोचकथा, कौतूहल, सजीवता एवं सूत्रबद्धता, मार्मिकता और प्रतीकात्मकता के प्रसंग आए हुए हैं। विवेच्य उपन्यास स्त्री स्वत्व के संदर्भ में सोचने के लिए पाठकों को प्रेरित करते हैं। जिसके परिणामस्वरूप स्त्री के प्रति समाज के दृष्टिकोण में परिवर्तन की प्रेरणा मिल रही है। शोध अध्ययन की यह मुख्य उपलब्धि माननी होगी। प्रत्येक उपन्यासों के शैलीपक्ष सिद्धियों के सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि शिल्प के स्तर पर वे एक सिद्ध हस्त कलाकार है। संरचना की दृष्टि से उनके उपन्यासों की बनावट एवं बुनावट प्रभावी की गई है तथा उनमें कहीं भी अनावश्यक फैलाव या स्फीति नहीं है। यही कारण उनके उपन्यासों में प्रयुक्त प्रत्येक घटना अपनी पूरी सार्थकता से मूल घटना के साथ सहज सम्बन्ध बनाए रखती है।

<u>अध्ययन की नई दिशाएँ</u>

वस्तुतः हर शोध विषय की अपनी सीमा होती है। मेरा शोध कार्य भी अपनी सीमा में रहकर सम्पन्न हुआ है। वास्तव में शोध अध्ययन के उपरांत निम्नलिखित विषय उभरकर सामने आए है जिसमें स्वतंत्र रूप से अनुसंधान की माँग करते हैं और शोध कार्य हो सकता है-

- स्त्री स्वत्व के संदर्भ में वर्तमान हिन्दी उपन्यासों का मूल्यांकन।
- स्त्री स्वत्व के सम्बन्ध में वर्तमान हिन्दी उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन
- चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में स्त्री अस्मिता का विश्लेषणात्मक अध्ययन।
- चन्द्रकान्ता का उपन्यास में भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन।
- समकालीन लेखिकाओं के कथा साहित्य में स्त्री स्वत्व की परिकल्पना (चयनित लेखिकाओं के विशेष सन्दर्भ में)

- चन्द्रकान्ता के उपन्यास: भारतीय पारिवारिक साँस्कृतिक राजनीतिक सन्दर्भ में।